चीन के खिलाफ नीति अपनाने के विरोध में अमेरिका के 100 विद्वानों का संयुक्त पत्र

बीजिंग: एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

पूर्वी एशिया और प्रशांत मामलों के लिए अमेरिकी विदेश मंत्रालय के पूर्व कार्यवाहक सहायक सचिव सुसान ए थॉर्नटन, चीन स्थित पूर्व अमेरिकी राजदूत जे स्टेपलटन रॉय और हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एज्रा वोगेल समेत सौ से अधिक अमेरिका के विद्वानों और कारोबारियों ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी कांग्रेस को संयुक्त पत्र भेजकर चीन के खिलाफ नीति अपनाने का विरोध किया. अमेरिका के पांच मशहूर चीनी मामले के विशेषज्ञों ने 'चीन दुश्मन नहीं है' नाम के इस संयुक्त पत्र के लेखन का नेतृत्व किया. द वॉशिंगटन पोस्ट ने बुधवार को इस संयुक्त पत्र को सार्वजनिक रूप से प्रकाशित किया गया.संयुक्त पत्र में 7 पहलुओं से वर्तमान अमेरिकी सरकार की चीन की नीति पर प्रकाश डाला गया और कहा गया है कि हाल ही में अमेरिकी सरकार की कई कार्यवाहियों से अमेरिका-चीन संबंधों में एक के बाद एक गिरावट हो रही है. संयुक्त पत्र के हस्ताक्षरकर्ताओं का विचार है कि अमेरिका और चीन के बीच संबंधों की तनाव स्थिति बढ़ने से अमेरिका और विश्व के हितों के अनुकूल नहीं है. वे इस बारे में गहराई से चिंतित हैं.संयुक्त पत्र में कहा गया है कि अमेरिका चीन को एक शत्रु मानता है और चीन के साथ संबंधों में अलग होने की कोशिश कर रहा है. यह अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय स्थान और प्रतिष्ठा, विश्व के विभिन्न देशों के आर्थिक हित को नुकसान पहुंचाएगा.

संयुक्त पत्र में कहा गया है कि चीन मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को उखाड़ फेंकने की कोशिश नहीं करता है.

इसके विपरीत, पिछले कुछ दशकों में चीन को इस अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था से लाभ मिला. अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के अस्तित्व और विकास, मौसम परिवर्तन मानव जाति की समान चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए चीन की भागीदारी अपरिहार्य है.

अमेरिका की कई दिग्गज कंपनियां चीन से हो सकती हैं स्थानांतरित

इचपी इंक, डेल, माइक्रोसॉफ्ट और अमेजन जैसी तकनीकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनियां चीन से पर्याप्त उत्पादन क्षमता को स्थानांतरित करने का विचार कर रही हैं.

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

नई दिल्ली: अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध का एक और नतीजा सामने आया है. इचपी इंक, डेल, माइक्रोसॉफ्ट और अमेजन जैसी तकनीकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनियां चीन से पर्याप्त उत्पादन क्षमता को स्थानांतरित करने का विचार कर रही हैं. गुरुवार को निक्केई एशियन रिव्यू में आई रिपोर्ट के अनुसार, चीन के चोंगकिंग और कुशान शहर में नोटबुक चलाने वाली एचपी और डेल दोनों कंपनियां अपने उत्पादन का 30 फीसदी देश के बाहर ले जाना चाहती हैं. इस दिशा में माइक्रोसॉफ्ट एक्सबॉक्स गेमिंग उत्पादन ढांचे को स्थानांतरित कर सकता है, जबकि अमेजन अपने जलाने और ध्वनि उत्पादों को स्थानांतरित कर सकती है.इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अन्य कंप्यूटर निर्माताओं जैसे लेनेवो ग्रुप, एसर और अस्सिटेक भी चीन के बाहर उत्पादन का पता लगा रहे हैं. इसके अलावा रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन में बढ़ती लागत भी उत्पादन निर्माताओं को विकल्प तलाशने को मजबूर

कर रही है. गौरतलब है कि एप्पल कंपनी पहले ही चीन से अपने स्मार्टफोन उत्पादन का 30 फीसदी तक स्थानांतरित करने के विकल्प पर विचार कर रही है. चीन वर्तमान में दुनिया का सबसे बड़ा कंप्यूटर व स्मार्टफोन उत्पादक देश है. निक्केई की रिपोर्ट में कहा गया है कि फॉक्सकॉन टेक्नोलॉजी व इन्वेंटेक ने चीन से कुछ उत्पादन को ताइवान और मैक्सिको जैसे अन्य देशों में स्थानांतरित कर दिया है. अब अमेजन और निन्टेंडो कथित तौर पर वियतनाम को एक विकल्प के तौर पर तलाश रहे हैं, जबकि माइक्रोसॉफ्ट थाईलैंड के साथ ही इंडोनेशिया पर नजर गड़ाए हुए हैं. हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि चीन के साथ चल रहे व्यापार युद्ध को समाप्त करने के लिए बातचीत पहले से ही शुरू हो चुकी है और आगे का रास्ता कांटों से भरा है.ट्रंप और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने ओसाका में हाल ही में जी-20 की बैठक में अमेरिकी कंपनियों को चीनी तकनीकी दिग्गज हुआवेई को उत्पाद बेचने की अनुमति पर सहमति जताई है. ट्रंप ने शी के साथ मुलाकात 32.5 करोड़ डॉलर मूल्य के चीनी आयातों पर 10 से 25 प्रतिशत के बीच सीमा शुल्क लगाने की धमकी दी थी.ईएफई की न्यूज रिपोर्ट में बताया गया है कि अमेरिका अपने सीमा शुल्क को 250 अरब डॉलर के चीनी सामान पर रख रहा है और बीजिंग अपने प्रतिशोधी सीमा शुल्क को 110 अरब अमेरिकी डॉलर के आयात पर बनाए रख रहा है.

कैलिफोर्निया में 6.4 तीव्रता से लगे भूकंप के झटके, आपातकाल घोषित

अमेरिका की भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के अनुसार, भूकंप गुरुवार शाम 5.33 बजे आया और शुरुआत में 35.70 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 117.51 डिग्री पश्चिमी देशांतर पर माना गया.

नई दिल्ली: अमेरिका में कैलिफोर्निया के सीर्ल्स वैली में दूरस्थ क्षेत्र में 6.4 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया. यह भूकंप राज्य में पिछले 20 सालों में सबसे शक्तिशाली है. अमेरिका की भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के अनुसार, भूकंप गुरुवार शाम 5.33 बजे आया और शुरुआत में 35.70 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 117.51 डिग्री पश्चिमी देशांतर पर माना गया.समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, भूकंप से प्रभावित होने वाला सबसे करीबी शहर रिजक्रेस्ट है. इसकी जनसंख्या 28,000 है और यह भूकंप के केंद्र 18 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम और लॉस एंजेलिस के 250 उत्तर-पूर्व में स्थित है.

रिजक्रेस्ट की मेयर पेगी ब्रीडन ने आपातकाल घोषित कर दिया है. उन्होंने कहा कि शहर में कम से कम पांच जगह आग लगने की घटनाएं हुईं, जो गैस की पाइप लाइन टूटने के कारण हुई हैं. इन्हें ठीक किया जा रहा है.

भूकंप को लॉस एंजेलिस तक महसूस किया गया और कई स्थानीय लोगों ने इस संबंध में ट्वीट किए. कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी की भूकंप विशेषज्ञ लूसी जोन्स ने कहा कि भूकंप का केंद्र दूरस्थ क्षेत्र में होने के कारण नुकसान बहुत कम हुआ. **एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)**

Indo-France Joint Exercise: फ्रांस के आसमान में भारत के वायुवीरों ने 'राफेल' में भरी उड़ान

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

फ्रांस के मॉन्ट डे मार्सैन में भारत-फ्रांस के बीच संयुक्त युद्धाभ्यास चल रहा है। इस दौरान भारतीय वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर सौरभ एम्बुरे ने राफेल में उड़ान भरी।

मॉन्ट डे मार्सैन. भारत और फ्रांस के वायुसेनाओं के बीच फ्रांस के मॉन्ट डे मार्सैन में 1 जुलाई से 'गरुड़' युद्धाभ्यास चल रहा है। फ्रांस और भारत के वायुवीरों के बीच आज से पहले इतना बड़ा युद्धाभ्यास कभी नहीं हुआ था। इस दौरान फ्रांस के आसमान में भारतीय वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर सौरभ एम्बुरे ने राफेल में उड़ान भरी। एक्सचेंज फ्लाइंग के दौरान एक्सचेंज फ्लाइंग के दौरान फ्रांस की वायुसेना के राफेल विमान में उड़ान भरी है। बता दें, भारत-फ्रांस के बीच संयुक्त युद्धाभ्यास का उद्देश्य दोनों वायु सेनाओं के बीच अंतर व्यवहार्यता और सहयोग को बढ़ाने के लिए अच्छी प्रथाओं को साझा करना है।

भारत-फ्रांस के बीच संयुक्त युद्धाभ्यास

भारत और फ्रांस के इस युद्धाभ्यास में राफेल, मिराज-2000, सुखोई 30 जैसे लड़ाकू विमानों देखने को मिल रहे हैं। दोनों देशों के बीच हिंद-प्रशांत सहयोग के तहत यह %गरूड़ अभ्यास% एक से 14 जुलाई 2019 तक चलेगा। इस संयुक्त इंडो-फ्रेंच युद्ध अभ्यास में मिराज 2000, सुखोई 30 एमकेआई, अल्फा जेट और कासा विमान शामिल हो रहे हैं लेकिन जो विमान सबसे ज्यादा ध्यान आकर्षित करेगा, उसका नाम है राफेल, जो जल्द ही भारतीय वायुसेना में शामिल होने वाला है।यह युद्धाभ्यास भारतीय वायुसेना के लिए राफेल जेट विमानों के बारे में ज्यादा जानने का अवसर प्रदान कर रहा है।

भारत और फ्रांस के बीच इंडो पैसिफिक सहयोग के अंतर्गत गरुड़ अभ्यास का यह छठा संस्करण है।2014 में भारत के जोधपुर में इस युद्धाभ्यास का पांचवां संस्करण आयोजित किया गया था। युद्धाभ्यास एक बार भारत में और इसके बाद एक बार फ्रांस में आयोजित किया जाता है।इस युद्धाभ्यास में शामिल होने के लिए भारतीय वायुसेना के 120 वायुवीरों की टुकड़ी फ्रांस पहुंची है। इसमें सुखोई-30 एमकेआई विमान, सी17 ग्लोबमास्टर मालवाहक विमान और आईएल 78 ईंधन भरने वाले विमान शामिल हैं।

भारत आएगा पहला 'राफेल' विमान

भारत ने 58,000 करोड़ रुपए की लागत से 36 राफेल जेट खरीदने के लिए फ्रांस के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं और पहला राफेल जेट इसी साल सितंबर में भारत आने वाला है।